माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
राजनीतिविज्ञान	1	3	0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 – 767314

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	2	2	4	3	1	2	5	5

शब्दों में

दो	दो	दो	चार	तीन	एक	दो	पाँच	पाँच

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल,माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल,माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में × शब्दों में ×

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 05

ग – परीक्षा की दिनांक 25 02 2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

H.S.S. EXAM-2022 केन्द्र क्रमांक-241035

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
G. Swami 25/2/2022	[signature]

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।
निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
P.MANDLOI Upper Middle Teacher H.S.S. BALEDI DHTWD/130/73..	श्रीमती श्या... वरिष्ठ अध्यापक शा.बा.उ.मा.वि. बाकानेर DHTWD/130/7528

नोट :– ''हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिम... स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।''

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में | कुल प्राप्तांक अंकों में

Laser, Inkjet & Copier Label ST-16 A4 99.1mm x 33.9mm x 16 Oddy

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करे और न ही छात्र उपयोग में ले। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें →

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें →

प्रश्न क्र.

प्र.क्र.1 का उ.

उ.1 1962.
उ.2 1992.
उ.3 24 अक्टूबर, 1945
उ.4 1968
उ.5 1992
उ.6 1953

प्र.क्र.2 का उ.

उ.1 चीन
उ.2 अजरबेजान (बाकू)
उ.3 1991
उ.4 565
उ.5 सी. राजगोपालाचारी
उ.6 1 जनवरी, 2015
उ.7 20 जोनेशिक्षा

प्र.क्र.3 का उ.

1. सीमित परमाणु परीक्षण संधि → 1963
2. सोवियत संघ का विघटन → 1991
3. चीन द्वारा भारत पर आक्रमण → 1962
4. आपातकाल → 1975
5. भारतीय किसान यूनियन → B.K.U
6. छात्र संगठन → A.ASU

MPBSE

[ ] + [ ] = [ ]

कुल अंक

4

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र.क्र. 4 का उ.

उ. 1 तमिल समुदाय।
उ. 2 अपरम्परागत।
उ. 3 आंध्रप्रदेश।
उ. 4 लाल बहादुर शास्त्री।
उ. 5 रूदाली।
उ. 6 नाना कालेकर।
उ. 7 सी. राजगोपालाचारी।

MPBSE

प्र.क्र. 5 का उ.

उ. 1 सत्य।
उ. 2 असत्य।
उ. 3 सत्य।
उ. 4 सत्य।
उ. 5 सत्य।
उ. 6 असत्य।

प्र.क्र. 6 का उ. [अथवा]

उ. 6 तटस्थता का अर्थ है दोनों महाशक्ति गुटों से दूरी बनाना। महाशक्ति गुटों के प्रभाव में न फँसना। दोनों महाशक्ति सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के गुटों में शामिल न होने की नीति तटस्थता कहलाती है।

प्र.क्र. 7 का उ. [अथवा]

प्रश्न क्र.

उ० 7 शॉक थेरेपी का शाब्दिक अर्थ है आघात पहुँचाकर उपचार क
साम्यवाद के पतन के पश्चात, रूस, मध्य एशिया के गणरा
और यूरोप के देशों में पूंजीवाद की तरफ जाने का एक स्वाव
मॉडल अपनाया गया, विश्व अ बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा
द्वारा निर्देशित इस मॉडल को शॉक थेरेपी कहा जाता है। इसके
अन्तर्गत राज्य सम्पदा का निजीकरण, पूंजीवादी प्रणाली से
करना आदि आता है। इसे सन् 1990 में अपनाया गया।

प्र०क्र० 8 का उ०

उ० वर्चस्व का अर्थ है विश्व राजनीति में शक्ति का एक ही
केन्द्र होना। यह किसी राष्ट्र के नेतृत्व और प्रभुत्व की उ
इशारा करता है। इसका आशय किसी एक देश का सर्वश
शाली होना है। जिस प्रकार शीतयुद्ध के बाद विश्व में (अमे
का वर्चस्व स्थापित था।

प्र०क्र० 9 का उ०

उ० 9 सार्क दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन को सार्क कहते है
इसकी स्थापना 1985 में हुयी थी। सार्क के सदस्य देश है
भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका
मालदीव और इनमें एक आठवां सदस्य अफगानिस्तान जोड़

प्र०क्र० 10 का उ०

उ० 10. वे सभी महामारियाँ जो संक्रमण फैलाती है विभिन्न व
या बैक्टीरिया द्वारा जैसे (1) कोरोना महामारी, (2) इन्फ्लु
(3) एवोला वायरस आदि। ये सभी अप्रवास व्यवसाय और
के माध्यम से तेजी से फैलती है।

MPBSE

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्र.क्र. 11 का उ.

उ. 11 वैश्वीकरण - "किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना वैश्वीकरण कहलाता है"। वैश्वीकरण को भू-मण्डलीकरण भी कहा जाता है। इससे विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के बीच व्यापार की प्रक्रिया होती है।

प्र. 12 का उ. [अथवा]

उ. 12 1957 के केरल राज्य के विधानसभा चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को सबसे ज्यादा सीटें प्राप्त हुयी थी। यह देश की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी

प्र.क्र. 13 का उ. [अथवा]

उ. 13. दलबदल अर्थात किसी एक पार्टी के चुनाव चिन्ह के द्वारा चुनाव लड़ना और जीतने के बाद दूसरी पार्टी में चले जाना एक पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी में चले जाना ही दलबदल है। भारतीय राजनीति में दलबदल को लेकर 'आया राम गया राम' काफी प्रचलित है।

प्र.क्र. 14 का उ. [अथवा]

उ. 14. एन. एफ. एफ - 'नेशनल फिशवर्कर्स फोरम'

N.F.F full form - National fishworkers forum.

प्र.क्र. 15 का उ.

MPBSE

प्रश्न क्र.

उ. 15. आपरेशन ब्लू-स्टार भारत सरकार द्वारा 1984 में स्वर्णमंदिर के अंदर घुसपैठ किए उग्रवादियों को भगाने के लिए चलाया गया था | जिसमें भारत सरकार को सफलता भी मिली थी |

प्र.क्र. 16 का उ.

उ. 16. सोवियत प्रणाली - समाजवादी सोवियत गणराज्य, रूस में हुयी 1917 की साम्यवादी क्रान्ति के पश्चात अस्तित्व में आया | यह क्रान्ति पूंजीवाद के विरोध स्वरूप हुयी थी और समाजवाद की आदर्शों की जरूरतों से प्रेरित थी | यह क्रान्ति पूंजीवाद के विरोध और समाज को समानता के सिद्धान्त पर लाने का सबसे प्रयत्न थी | ऐसा करने के लिए सोवियत प्रणाली निर्माताओं राज्य की संस्था और पार्टी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी | सोवियत राजनीतिक प्रणाली की धुरी कम्यूनिस्ट पार्टी ही थी और किसी और विपक्षी दल या पार्टी के लिए कोई जगह नहीं थी | सोवियत आर्थिक प्रणाली योजनाबद्ध तथा राज्य के नियंत्रण में थी | सोवियत संघ की संचार प्रणाली काफी उन्नत थी | उसके सुदूर क्षेत्र भी आवागमन की सुव्यवस्थित व्यवस्था के कारण आपस में जुड़े हुए थे | सोवियत संघ में मूलभूत आवश्यकताएँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य बच्चों की देखभाल, समाज कल्याण की वस्तुएँ रियायती दर पर उपलब्ध थी | उत्पादन तथा वितरण के साधनों पर राज्य का नियंत्रण था |

प्र.क्र. 17 का उ. [अथवा]

उ. 17 युरोपीय संघ की निम्न विशेषताएँ उसे एक प्रभावी संगठन बनाती हैं -

M P B S E

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

1. एक समान राजनीतिक स्वरूप।
2. आर्थिक प्रभाव तथा शक्ति।
3. राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव।

1. **एक समान राजनीतिक स्वरूप** – यूरोपीय संघ ने एक आर्थिक सहयोग समुदाय से परिवर्तित होकर आधिकारिक राजनीतिक स्वरूप ले लिया है। इसका अपना स्वयं का एक झंडा, एक गीत तथा स्थापना दिवस है।

2. **आर्थिक प्रभाव तथा शक्ति** – यूरोपीय संघ का आर्थिक प्रभाव तथा शक्ति भी किसी से छिपी हुई नहीं है। यह 2005 में विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। इसका आर्थिक प्रभाव बहुत ज्यादा है। इसकी मुद्रा यूरो अमेरिकी डॉलर के प्रभुत्व के समक्ष एक चुनौती बन गयी है।

3. **राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव** – यूरोपीय संघ का राजनीतिक और कूटनीतिक प्रभाव भी विश्व पटल पर अंकित है। इसके दो सदस्य देशों के पास सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता है।

प्र० 18 का उ०

उ. 18 – कृषि के परम्परागत तरीकों के स्थान पर आधुनिक तरीकों का उपयोग जैसे नहरों व नलकूपों से सिंचाई, उत्तम किस्म के बीजों का प्रयोग, रासायनिक खादों का प्रयोग, वाणिज्यिक फसलों का उत्पादन आदि किया जाने लगा, जिससे कृषि में परिवर्तन आया और देश में खाद्यान्न की उपलब्धता में वृद्धि हुयी, जिसे हरित क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न क्र.

हरित क्रान्ति से पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों को बहुत लाभ हुआ। हरित क्रान्ति से गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि हुयी। हरित क्रान्ति में अनाज के ज्यादा उत्पादन के कारण बाजार में अनाज की कालाबाजारी बन्द हो गयी या खत्म हो गई। कृषि की वस्तुएँ और मशीनें बनाने वाले उद्योगों का विकास हुआ, जिससे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। हरित क्रान्ति से बड़े भू-स्वामी को ज्यादा फायदा हुआ, कृषि को व्यवसायिक दृष्टि से देखा जाने लगा। भारत में हरित क्रान्ति के जनक एम. एस. स्वामीनाथन को माना जाता है।

प्र.क्र. 19 का उ.

उ.19 1960 के दशक से ही विद्यार्थियों में विरोध के स्वर उठने लगे थे। ये स्वर इस दशक में और ज्यादा प्रबल हो गए। संसदीय प्रणाली में विश्वास न रखने वाले कुछ समूहों की सक्रीयता भी इस अवधि में बढ़ी। इन समूहों ने मौजूदा राजनीतिक प्रणाली और पूंजीवादी प्रणाली तथा व्यवस्था को समाप्त करने के लिए हथियार उठाए और गैर संविधानिक संवैधानिक तकनीकों का प्रयोग किया। ये समूह मार्क्सवादी, लेनिनवादी और नक्सलवादी कहलाए। ऐसे समूह पश्चिम बंगाल में ज्यादा सक्रिय थे। पश्चिम बंगाल की सरकार ने उन्हें दबाने के लिए कठोर कदम उठाए। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के एक गाँव नक्सलवाड़ी, जहाँ नक्सलवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने एक बड़े किसान विद्रोह को अंजाम दिया। 1967 की घटना है जब नक्सलपंथियों ने धनी किसानों से जमीन छीनकर गरीब या भूमिहीन किसानों को जमीन देने का आन्दोलन चलाया। सी.पी.एम के नेताओं ने अलग होकर एक नई पार्टी सी.पी.आई बनाई। चारु मजूमदार और कानू सान्याल

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
MPBSE

प्रश्न क्र.

इस पार्टी के नायक के रूप में उभरे | 1972 में पुलिस हिरासत में चारू मजूमदार की मृत्यु हो गई | परन्तु नक्सलवाद का अन्त नहीं और वर्तमान यह एक बड़ी समस्या बन गयी है |

प्र०क्र० 20 का उ० [अथवा]

उ.20. क्यूबा मिसाइल संकट को शीतयुद्ध का चरम बिन्दु कहा जाता है | यह घटना 1962 में हुयी थी | जब 1961 में सोवियत संघ द्वारा अमेरिका के दक्षिण में स्थित क्यूबा में प्रक्षेपास्त्र अड्डा स्थापित करने हेतु अपने नौसैनिक जहाजों के संरक्षण में आवश्यक हथियारों को ले जाने की पहल की अमेरिका ने इसका तीव्र विरोध और अपनी नौसेना द्वारा क्यूबा के चारों ओर नाकाबंदी करते हुए यह घोषणा कि क्यूबा की ओर जाने वाली जहाजों की तलाशी लेने के बाद ही जाने की अनुमति दी जाएगी सोवियत संघ और अमेरिका में अत्याधिक तनाव की स्थिति पैदा हो गई | अमेरिका जानता था कि यदि सोवियत संघ क्यूबा से अमेरिका पर हमला करता तो अमेरिका को बहुत हानि उठानी पड़ती | इसलिए वह चाहता था कि सोवियत संघ ऐसा न करे | लेकिन उस समय तनाव बहुत ज्यादा बढ़ गया | ऐसा प्रतीत होने लगा था कि अमेरिका और सोवियत संघ के बीच कभी-भी तृतीय विश्व युद्ध हो सकता है | दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों के बीच हॉटलाइन वार्ता का दौर चला | यहाँ सोवियत संघ ने समझदारी दिखाते हुए क्यूबा की ओर जाने वाली जहाजों को दक्षिण की ओर मोड़कर वापस लाने का आदेश दिया | इस तरह परमाणु शक्ति युद्ध का खतरा टला और दोनों देशों ने भविष्य में ऐसी स्थिति पुन: न

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

उत्पन्न होने देने के लिए सहमत हुए।

प्र०क्र० ३१ का उ० (अथवा)

उ० ३१ विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना सन् १९४८ में की गई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख कार्य निम्न लिखित हैं-

१. बीमारी की रोकथाम करना।
२. बीमारी का उपचार करना।
३. समाज सेवा के कार्यों में लगे लोगों को प्रशिक्षण देना।
४. स्वास्थ्य प्रशासन में सुधार करना।

MPBSE

१. बीमारी की रोकथाम करना - विश्व स्वास्थ्य संगठन का प्रमुख कार्य विश्व में फैलने वाली बीमारियों के रोकथाम के उपाय करना। किसी भी प्रकार की बीमारी से मानव जाति की सुरक्षा किस प्रकार की जाए। मानव किसी भी प्रकार के संक्रमण से कैसे बचे। इसके उपाय करना स्वास्थ्य संगठन का कार्य है।

२. बीमारी का उपचार करना - विश्व स्वास्थ्य संगठन का एक कार्य यह भी है कि वह वैश्विक स्तर पर फैलने वाली बीमारियों का इलाज ढूंढे कि किस प्रकार इस बीमारी को मात दी जा सकती है। विभिन्न दवाईयों का निर्माण करके, टीकों का निर्माण करके आदि द्वारा बीमारी का उपचार ढूँढे।

३. समाज सेवा के कार्यों में लगे लोगों को प्रशिक्षण देना -

जो लोग अपनी जान पर खेलकर महामारियों या अन्य

प्रश्न क्र.

परेशानियों के बीच समाजसेवा के कार्यों में लगे रहते हैं। उनको प्रशिक्षित करना कि वो अपनी जान की रक्षा किस प्रकार करें तथा सुरक्षित रहने के लिए कौन से उपाय अपनाए।

स्वास्थ्य प्रशासन में सुधार करना - स्वास्थ्य योजनाओं या व्यवस्थाओं में सुधार किस प्रकार किया जा सकता है, उसके विषय में परामर्श देना विश्व स्वास्थ्य संगठन का ही काम है। स्वास्थ्य से संबंधी विविध योजनाएँ चलाना आदि।

प्र०क्र० 22 का उ०

22 अंग्रेजों के समय प्रान्तों की सीमाएँ प्रशासनिक सुविधाओं के आधार पर तय की गई थी। प्रान्त विशेष की भाषा और संस्कृति की उपेक्षा की गयी थी। स्वतंत्रता के पश्चात लोगों ने भाषा और संस्कृति के आधार पर राज्यों के गठन की मांग की। शीघ्र ही इस मांग ने व्यापक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। सन् 1953 में सरकार ने मद्रास प्रान्त के कुछ तेलुगु भाषी राज्यों को अलग करके एक नए प्रदेश आंध्रप्रदेश की स्थापना की। सन 1953 में भारत सरकार द्वारा सईद फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गई। इस आयोग में कुछ अन्य महत्वपूर्ण सदस्य भी थे। इस आयोग का प्रमुख काम राज्यों के सीमांकन के मामले को देखना था। राज्यों के पुनर्गठन हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गई थी। इस आयोग विभिन्न प्रकार की कार्यवाही करने के बाद अपनी रिपोर्ट केन्द्र सरकार को सौंपी थी

MPBSE

प्रश्न क्र.

इस आयोग ने 1955 में अपनी रिपोर्ट केन्द्र सरकार को सौंपी थी | आयोग की प्रमुख सिफारिशें निम्न लिखित हैं -

1. राज्यों को पुनर्गठित करते हुए देश की एकता और अखंडता को सर्वोच्च प्राथमिकता से ध्यान में रखा जाए |

2. केवल भाषा के आधार पर 'एक भाषा एक राज्य' के सिद्धान्त को राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पूर्णतः निरस्त माना जाए |

3. नवगठित राज्यों के निर्माण के समय भाषा और संस्कृति को भी विचारण में रखा जाए |

4. राज्यों के ए.बी.सी.डी वर्गीकरण को समाप्त कर | भारतीय संघ को 16 राज्यों और 3 संघ प्रदेश में बाँटा जाए |

MPBSE

प्र.क्र. 23 का उ.

उ. 23. भारतीय विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्त निम्न हैं -

1. तटस्थता तथा असंलग्नता |
2. सहअस्तित्व अथवा पंचशील |
3. आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप का विरोध |
4. अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव, सहयोग और मित्रता |

1. तटस्थता अथवा असंलग्नता - भारत की विदेश नीति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

यह है कि उसने किसी गुट में शामिल न होकर तटस्थता की नीति अपनायी है। तटस्थता का अर्थ यह नहीं है कि भारत विश्व में घटित घटनाओं की अनदेखी करेगा।

2. सहअस्तित्व अथवा पंचशील - भारत दूसरे देशों के अस्तित्व के प्रति सहनशील है। विभिन्न देशों के अस्तित्व के प्रति संवेदनशील रहना जिसे पंचशील का नाम भी दिया जाता है। भारत की विदेश नीति का एक और मौलिक सिद्धान्त है। भारत के लिए पंचशील कोई नवीन सिद्धान्त नहीं है। भारत ने सदैव शांति का रास्ता अपनाया है।

3. आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप का विरोध - भारत की विदेश नीति का एक सिद्धान्त यह है कि भारत किसी भी देश के आंतरिक मामले में विदेशी हस्तक्षेप का प्रबल विरोधी है।

अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव, सहयोग एवं मित्रता - भारतीय विदेश नीति का एक सिद्धान्त यह है कि भारत विश्व में सद्भाव, सहयोग और मित्रता के संबंध स्थापित करना चाहता है।

M P B S E